भाषा विद्याशाखा
UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

सत्रीय कार्य डिप्लोमा

संस्कृत (DSL-10)

जमा करने की अन्तिम तिथि– 15 मई, 2012

कोर्स शीर्षक – प़द्य काव्य **कोर्स कोड** ईएसएल 03

शैक्षिक सत्र 2011–12 ग्रीष्मकालीन सत्र **अधिकतम अंक** –40

यह सत्रीय कार्य दो खण्डों में विभक्त है। खण्ड 'क' में आठ प्रश्न दिये गये है। उनमें से किन्ही चार के उत्तर अधिकतम 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। खण्ड 'ख' मे 4 प्रश्न दिये गये हैं जिनमें से किन्ही 2 प्रश्नो के विस्तृत उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

खण्ड 'क'

1• **किरातार्जुनीयम़ के रचनाकार भारवि का समय निर्धारण कीजिए।**

2• **हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः** इस सूक्ति की व्याख्या कीजिए ।

3• **न वंचनीयाः प्रभवोनुजीविभिः** इस सूक्ति की व्याख्या कीजिए ।

4• **सहसा विद़धीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदं** इस सूक्ति की व्याख्या कीजिए ।

5• **स किम सखासाधु न शास्ति योऽधिपं**
हितान्न यः संश्रुणुते स किम्प्रभुः ।
सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः ।। इस श्लोक की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए ।

6• कुमारसंभव के आधार पर तीन उदाहरणों द्वारा उपमा को स्पष्ट कीजिए ।

7• पार्वती के जन्म का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ।

8• कालिदास का काल निर्धारण संक्षेप में लिखिए ।

खण्ड 'ख '

1• **भारवेऽर्थगौरवं कथन की समीक्षा कीजिए ।**

2• **किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग का सारांश लिखिए ।**

3• **एक महाकाव्य के रूप में कुमारसंभव का मूल्यांकन कीजिए ।**

4• **महाकवि कालिदास की काव्यकला की समीक्षा कीजिए ।**